

भूकंपों की अधिकता के कारण

﴿ سبب كثرة الزلازل ﴾

[हिन्दी - Hindi - هندي]

मुहम्मद सालेह अल-मुनजिद

अनुवाद: अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

१४३१ - २०१०

Islamhouse.com

﴿ سبب كثرة الزلازل ﴾

« باللغة الهندية »

محمد صالح المنجد

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

٢٠١٠ - ١٤٣١

IslamHouse.com



बिस्मिल्लाहिर्हमानिर्हीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हمد व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हمد व सना के बाद :

भूकंपों की अधिकता के कारण

प्रश्न:

कई सारे देश जैसे कि : तुर्की, मेक्सिको, ताइवान, जापान, और अन्य देश ... भूकंप से ग्रस्त हुए हैं, तो क्या ये किसी बात के संकेतक हैं ?

उत्तर:

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान अल्लाह के लिए योग्य है, तथा दया और शांति अवतरित हो अल्लाह के पैगंबर, आप के परिवार, आप के साथियों और आप के द्वार निर्देशित मार्ग पर चलने वालों पर, अल्लाह की प्रशंसा और गुणगान के बाद :

सर्वशक्तिमान और पवित्र अल्लाह जो कुछ भी फैसला करता और मुक़द्दर करता है, उस में वह सर्वबुद्धिमान और सर्वज्ञानी है, जिस तरह कि उस ने जो कुछ धर्म संगत बनाया है और जिस का हुक्म दिया है उस में वह सर्वबुद्धिमान और सर्वज्ञानी है, और वह पवित्र अल्लाह जो भी निशानियाँ चाहता है पैदा करता और मुक़द्दर करता है ; ताकि बन्दों को डराये धमकाये, और उन के ऊपर अल्लाह का जो हक़ अनिवार्य है उन्हें उस का स्मरण कराये, और उन्हें अपने साथ शिर्क करने, और अपने आदेश का उल्लंघन करने और अपने निषेद्ध और वर्जित किये हुए कामों को करने से सावधान करे, जैसाकि अल्लाह सुब्हानहु व तआला का फरमान है :

﴿ وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخَوِيفًا ۝٥٩ ﴾ [الإسراء: ٥٩]

“हम तो लोगों को केवल धमकाने के लिए निशानियाँ भेजते हैं।” (सूरतुल इस्रा : ५९)

तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह ने फरमाया :

﴿ سَنُرِيهِمْ ءَايَاتِنَا فِي الْأَفَاقِ وَفِي أَنْفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ۖ أَوَلَمْ يَكْفِ

رَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝٥٣ ﴾ [فصلت: ٥٣]

“जल्द ही हम उन्हें अपनी निशानियाँ दुनिया के किनारों में भी दिखायेंगे और खुद उन के अपने वजूद में भी, यहाँ तक कि उन पर खुल जाये कि सच यही है। क्या आप के रब का हर चीज़ से अवगत होना काफी नहीं।” (सूरत फुस्सिलत ६१/ ५३)

तथा अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِن تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلِيَسَّكُمْ شَيْعًا

وَيَذِيقَ بَعْضُكُم بَأْسَ بَعْضٍ﴾ [الأنعام: ٦٥]

“आप कह दीजिये कि वही तुम पर तुम्हारे ऊपर से कोई अज़ाब भेजने या तुम्हारे पैरों के नीचे से (अज़ाब) भेजने या तुम्हें अनेक गिरोह बनाकर आपस में लड़ाई का मज़ा चखाने की ताक़त रखता है।” (सूरतुल अंआम : १०).

तथा इमाम बुखारी ने अपनी सहीह में जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि जब अल्लाह तआला का यह फरमान कि : “आप कह दीजिये कि वही तुम पर तुम्हारे ऊपर से कोई अज़ाब भेजने में सक्षम है” तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : (मैं तेरे चेहरे की शरण में आता हूँ।) “या तुम्हारे पैरों के नीचे से” तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : (मैं तेरे चेहरे की पनाह में आता हूँ।) (सहीह बुखारी ०/१९३)

तथा अबुशशैख अल असबहानी ने इस आयत : “आप कह दीजिये कि वही तुम पर तुम्हारे ऊपर से कोई अज़ाब भेजने में सक्षम है” की तफसीर (व्याख्या) में मुजाहिद से रिवायत किया है कि उन्होंने ने कहा : चींख, पत्थर और तेज़ हवा (का अज़ाब)। “या तुम्हारे पैरों के नीचे से” मुजाहिद ने कहा : भूकंप और धंसा दिया जाना।

इस में कोई शक नहीं कि इन दिनों बहुत सारे छेत्रों में जो भूकंप आ रहे हैं वे उन निशानियों में से हैं जिन के द्वारा अल्लाह सुब्बानहु व तआला अपने बन्दों को डराता और धमकाता है, तथा इस जगत में जो भी भूकंप

और प्राकृतिक आपदायें इत्यादि आती हैं जिन के द्वारा मानव को हानि पहुँचती है और उन के लिए कई प्रकार के कष्ट का कारण बनती है, सब के सब शिर्क और गुनाहों की वजह से हैं, जैसाकि सर्वशक्तिमान अल्लाह का फरमान है :

﴿ وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فِيمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ﴾ (३०)

[الشورى: ३०]

“और जो कुछ भी कष्ट तुम्हें पहुँचता है वह तुम्हारे अपने हाथों के करतूत का (बदला) है। और वह बहुत सी बातों को माफ कर देता है।” (सूरतुशूरा : ३०)

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿ مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ وَمَا أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَفْسِكَ ﴾ [النساء: ७९]

“आप को जो भलाई पहुँचती है वह अल्लाह तआला की तरफ से है और जो बुराई पहुँचती है वह स्वयं आप के अपनी तरफ से है।” (सूरतुन निसा : ७९)

और अल्लाह तआला ने पिछले समुदायों के बारे में फरमाया :

﴿ فَكَلَّا أَخَذْنَا بِذُنُوبِهِ فَمِنْهُمْ مَنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ

وَمِنْهُمْ مَنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُمْ مَنْ أَغْرَقْنَا وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِمَهُمْ

وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴾ [العنكبوت: ६०]

“फिर तो हम ने हर एक को उस के पाप की सज़ा में धर लिया, उन में से कुछ पर हम ने पत्थरों की बारिश की, उन में से कुछ को तेज़ चीख़ ने दबोच लिया, उन में से कुछ को हम ने धरती में धंसा दिया और उन में से कुछ को हम ने पानी में डुबो दिया। अल्लाह तआला ऐसा नहीं कि उन पर जुल्म करे बल्कि वही लोग अपनी जानों पर जुल्म करते थे।” (सूरतुल अनकबूत : ६०)

अतः मुकल्लफ (वह व्यक्ति जो शरीअत के आदेश का पालन करने की अनिवार्यता की योग्यता रखता हो) मुसलमानों और अन्य लोगों पर अनिवार्य है कि वे अल्लाह के सामने तौबा करें, उस के धर्म पर मज़बूती के साथ जम जायें, और जिस शिर्क और अवज्ञा से उस ने रोका है उस से बचाव करें, ताकि उन्हें दुनिया और आखिरत में सभी बुराईयों से मोक्ष और छुटकारा प्राप्त हो, और ताकि अल्लाह तआला उन से हर आपदा को हटा दे और उन्हें हर प्रकार की भलाई प्रदान करे, जैसाकि अल्लाह सुब्हानहु व तआला का फरमान है :

﴿وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ ءَامَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِن كَذَّبُوا ۖ فَآخَذْنَا مِنْهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ﴾

[الأعراف: ११६]

“और यदि उन नगरों के निवासी ईमान ले आते तथा तक्वा (संयम) अपनाते तो हम उन पर आकाश एवं धरती की बरकतें (विभूतियां) खोल देते, किन्तु उन्होंने ने झुठलाया तो हम ने उनके (कु)कर्मों के कारण उन्हें पकड़ लिया।” (सूरतुल आराफ: ११६)

तथा अल्लाह तआला ने अहले किताब (यहूदियों और ईसाईयों) के बारे में फरमाया :

﴿ وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَأَكَلُوا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ

تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ ﴾ [المائدة: ٦٦]

“और अगर वे तौरात और इंजील और उन धर्म शास्त्रों की पाबंदी करते जो उन की तरफ उन के रब की ओर से उतारी गई है तो अपने ऊपर और पैरों के नीचे से खाते।” (सूरतुल माइदा : ६६)

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿ أَفَأَمِنْ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا بَيِّنًا وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿٩٧﴾ أَوْ أَمِنْ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ

يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا ضُحًى وَهُمْ يُلْعَبُونَ ﴿٩٨﴾ أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا

الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٩٩﴾ ﴾ [الأعراف: ९७-९९]

“क्या फिर भी इन बस्तियों के निवासी इस बात से निश्चिन्त हो गए हैं कि उन पर हमारा प्रकोप रात के समय आ पड़े जिस समय वह नींद में हों। तथा क्या इन बस्तियों के निवासी इस बात से निश्चिन्त हो गये हैं कि उन पर हमारा प्रकोप दिन चढ़े आ पड़े जिस समय वह अपने खेलों में व्यस्त हों। क्या वे अल्लाह की पकड़ से निश्चिन्त (निर्भय) हो गये, सो अल्लाह की पकड़ से वही लोग निश्चिन्त होते हैं जो छतिग्रस्त (घाटा उठाने वाले) हैं।” (सूरतुल आराफ: ९७-९९)

अल्लामा इब्नुल कैयिम रहिमहुल्लाह फरमाते हैं : “कभी कभी अल्लाह सुब्हानहु व तआला धरती को साँस लेने की अनुमति देता है तो उस में बड़े बड़े भूकंप पैदा होते हैं, और इस से वह अपने बन्दों के अंदर भय

और डर, अल्लाह की तरफ एकाग्रता, गुनाहों का परित्याग, अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाना, और पछतावा पैदा करता है, जैसाकि किसी सलफ (पूर्वज) ने धरती पर भूकंप आने के समय कहा था कि : तुम्हारा पालनहार तुम से क्षमा याचना करवा (गुनाहों की माफी मंगवा) रहा है। तथा उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब मदीना में भूकंप आया तो लोगों को सम्बोधित किया और उन्हें नसीहत (सदुपदेश) किया, और कहा : यदि इस में दुबारा भूकंप आया तो मैं तुम्हारे साथ इस में निवास नहीं करूँगा।” (इब्नुल कैयिम की बात समाप्त हुई)

सलफ सालेहीन (पूर्वजों) से इस विषय में बहुत सारे कथन वर्णित हैं .. अतः भूकंप और उस के अलावा अन्य निशानियों, तेज़ हवा, और बाढ़ आने के समय अल्लाह सुब्हानहु व तआला से तौबा करने में जल्दी करना, उस के सामने रोना गिड़गिड़ाना, उस से सुरक्षा और शांति का प्रश्न करना, अधिक से अधिक उस का ज़िक्र करना और क्षमा याचना करना अनिवार्य है, जैसाकि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ग्रहण लगने के समय फरमाया था कि : "जब तुम इसे देखो तो अल्लाह तआला के ज़िक्र व अज़कार (स्मरण), उस से दुआ करने और उस से क्षमा याचना करने (गुनाहों की माफी मांगने) की तरफ जल्दी करो।" यह सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम की हदीस का एक भाग है। (सहीह बुखारी १/३०, सहीह मुस्लिम १/१२८).

तथा गरीबों और मिस्कीनों पर दया करना और उन पर दान करना भी मुस्तहब है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है :

“तुम (दूसरों पर) दया करो, तुम पर (भी) दया की जायेगी।” इसे इमाम अहमद ने रिवायत किया है (२ / १६०)

“दया करने वालों पर अति दयालू (अल्लाह तआला) दया करता है, तुम धरती वालों पर दया करो, आकाश वाला तुम पर दया करेगा।” इसे अबू दाऊद (१३ / २८०) और तिर्मिज़ी (६ / ६३) ने रिवायत किया है।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : “जो दया नहीं करता उस पर दया नहीं की जाती।” (सीह बुखारी ० / १०, सहीह मुस्लिम ६ / १८०९)

तथा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहिमहुल्लाह से वर्णित है कि वह अपने गवर्नरों के पास भूकंप आने के समय खैरात करने के लिए पत्र लिखते थे। तथा हर बुराई से बचाव और सुरक्षा के कारणों में से अधिकारियों (शासकों) का मूर्खों के हाथ को पकड़ने, उन्हें हक को अपनाने पर मजबूर करने, उन के बारे में अल्लाह की शरीअत के फैसले को लागू करने, भलाई का आदेश देने और बुराई से रोकने में शीघ्रता से काम लेना भी है, जैसाकि सर्वशक्तिमान अल्लाह का फरमान है :

﴿وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ

الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ

سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾ [التوبة: ٧١]

“मोमिन पुरुष और महिलाएं आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं, वे भलाई का आदेश देते हैं और बुराई से रोकते हैं, नमाज़ काईम करते हैं और ज़कात देते हैं, तथा अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (फरमांबरदारी) करते हैं, यही लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला दया करेगा, अल्लाह तआला शक्तिवान और ग़ल्बे वाला और हिक्मत वाला है।” (सूरतुत्तौबा : ११)

तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह ने फरमाया :

﴿وَلَيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَن يَنْصُرُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٤٠﴾ الَّذِينَ إِن مَّكَّنَّاهُمْ فِي

الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَأَمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَاللَّهُ

عَلِيمٌ الْأُمُورِ ﴿٤١﴾﴾ [الحج: ४०-४१]

“जो अल्लाह की मदद करेगा अल्लाह भी उस की ज़रूर मदद करेगा, बेशक अल्लाह तआला बहुत ताक़तवर और प्रभुत्ता वाला (गालिब) है। ये वे लोग हैं कि अगर हम इन के पैर धरती पर मज़बूत कर दें तो यह पाबन्दी से नमाज़ अदा करेंगे और ज़कात देंगे और अच्छे कामों का हुक्म देंगे और बुरे कामों से मना करेंगे, और सभी कामों का परिणाम अल्लाह के हाथ में है।” (सूरतुल हज्ज : ४०-४१)

तथा अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने फरमाया :

﴿وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٢﴾ وَيَرْزُقْهُ مِن حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ

حَسْبُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَلِغُ أَمْرِهِ ﴿٣﴾﴾ [الطلاق: २ - ३]

“और जो इंसान अल्लाह से डरता है अल्लाह उस के लिए छुटकारे का रास्ता निकाल देता है। और उसे ऐसी जगह से रोज़ी देता है जिस का उसे अंदाज़ा भी न हो। और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह तआला उसके लिये पर्याप्त है। (सूरतुत्तलाक़ : २-३)

इस अर्थ की आयतें बहुत हैं।

तथा पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : “जो आदमी अपने भाई की आवश्यकता में लगा रहता है, अल्लाह तआला उस की आवश्यकता में होता है।” (सहीह बुखारी ३/१८, सहीह मुस्लिम ६/१९१६).

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : “जिस ने किसी मोमिन से दुनिया की परेशानियों में से कोई परेशानी (संकट) को दूर कर दिया तो (उस के बदले) अल्लाह तआला उस से क़ियामत के दिन की परेशानियों में से एक परेशानी को दूर कर देगा, और जिस ने किसी तंगदस्त (कठिनाई पीड़ित) पर आसानी की तो अल्लाह तआला दुनिया और आखिरत में उस पर आसानी फरमायेगा, और जिस ने किसी मुसलमान पर पर्दा डाला तो अल्लाह तआला उस पर दुनिया व आखिरत दोनों में पर्दा डालेगा, तथा अल्लाह तआला बन्दे की मदद में रहता है जब तक कि बन्दा अपने भाई की मदद में होता है।” (सहीह मुस्लिम ६/२०१६) इस अर्थ की हदीसें बहुत हैं।

तथा अल्लाह तआला ही से इस बात का प्रश्न है कि समस्त मुसलमानों के मामलों को सुधार (सँवार) दे, उन्हें दीन की समझ प्रदान करे, और उन्हें उस पर स्थिरता और सभी गुनाहों से अल्लाह से तौबा करने की तौफीक़

दे, तथा मुसलमानों के शासकों और उन के मामलों के ज़िम्मेदारों का सुधार करे, उन के द्वारा हक की मदद करे, और उन के द्वारा बातिल को असहाय कर दे, और उन्हें अपने बन्दों में अल्लाह की शरीअत को लागू करने की तौफीक दे, और उन्हें तथा समस्त मुसलमानों को पथभ्रष्ट करने वाले फित्नों (उपद्रवों) और शैतान के वस्वसों (प्रलोभन) से सुरक्षित रखे, यकीनन वह इस का स्वामी और इस पर शक्तिमान है।

तथा अल्लाह तआला हमारे सन्देश्ता मुहम्मद, आप के परिवार और साथियों, तथा क़ियामत के दिन तक भलाई के साथ उनका अनुसरण करने वालों पर, दया और शांति अवतरित करे।

अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ –रहिमहुल्लाह–

**मजल्ला अल बुहूसुल इस्लामिय्या (इस्लामी अनुसंधान पत्रिका) संख्या :
०१, वर्ष १६१८ हिज़्री।**